श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा

रचयिता - राजेश कासलीवाल, उज्जैन

स्थापना

(हरिगीत)

तीर्थनाथ जिनेन्द्र पारस, अरस सरस अपार हैं ।
आनंद के रसकंद हैं, भवफंद से वे पार हैं ।
वे सार हैं आधार हैं वे, भाविक को सुखकार हैं ।
शत इन्द्र वंदित त्रिजगपति को, वंदना शत बार है ।

(दोहा)

अत्र अवतर अवतरो, तिष्ठो उर में आन ।
निकट रहो प्रभुवर सदा, यही विनय आव्हान ।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट । ॐ ह्री श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(चामर छंद)

मोह भाव के प्रभाव भव अनंत में भ्रमा ।
देह जो भी मिली मान ली आतमा ।
जन्म मरण नाश हो शुद्ध नीर से जजें ।
पार्श्वनाथ देव को द्रव्य भाव से भजें ।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोह भाव संग राग-द्वेष आताप से ।
जल रहा हूँ प्रभो व्यर्थ संताप से ।
भवाताप नाश हेत मलयज से जजें ।
पार्श्वनाथ देव को द्रव्य भाव से भजें ।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षण-क्षण भाव मर्ण अनंत दुख को लहा ।
सत्व आत्म तत्व को भूल क्षय हो रहा ।
पद अक्षय मिले अक्षतों से जजें ।
पार्श्वनाथ देव को द्रव्य भाव से भजें ।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

ब्रह्म भाव को बिसार मार की मार से ।
छार-छार हूँ प्रभो ! तार संसार से ।
भाव कोमल बने दिव्य पुष्प से जजें ।
पार्श्वनाथ देव को द्रव्य भाव से भजें ।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

आत्म आनंद का परिपूर्ण धाम है ।
तब क्षुधा भाव का कहो क्या काम है ?
क्षुधा भाव नाशने नेवज से जजें ।
पार्श्वनाथ देव को द्रव्य भाव से भजें ।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा ।

तीनलोक दीप्त है आप ज्ञानभान से ।
मैं तमा में रहा घोर अज्ञान से ।
अज्ञभाव अंत हो दीप ले कर जजें ।
पार्श्वनाथ देव को द्रव्य भाव से भजें ।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूम्र लक्ष्यहीन ज्यों दिग-दिगंत में भ्रमे ।
आत्म-भान-हीन जीव चहुंगति परिभ्रमे ।
सब विकार हो विनष्ट धूप से नित जजें ।
पार्श्वनाथ देव को द्रव्य भाव से भजें ।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुण्य-पाप-भाव फल दुख संसार है ।
मुक्तिनाथ हो प्रभो मोक्ष ही सार है ।
महामोक्ष प्राप्त हो दिव्य फल से जजें ।
पार्श्वनाथ देव को द्रव्य भाव से भजें ।

श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्रव्य-गुण-भाव से पूर्ण परमातमा ।
आपको भूल मैं भव-भव में भ्रमा ।
पद अनर्घ्य प्राप्त हो अष्ट द्रव्य से जजें ।
पार्श्वनाथ देव को द्रव्य भाव से भजें ।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

॥ पंच कल्याणक ॥

(गीता छंद)

षटमास पूरब रतन बरसे, आए प्रभु जब सुरग से ।
अश्वसेन सुधन्य हो गए, पार्श्व वामा उर बसे ।
वैशाख की शुभ दूज कृष्णा, वाराणसी आनंदमय ।
छप्पन कुमारी अष्ट देवी, नृत्य गायन मधुर लय ।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तिहुंलोक में आनंद छाया, जन्में त्रिलोकीनाथ जब ।
सुरलोक से सब देव आए, सौधर्म शचि के साथ तब ।
एकादशी बदि पौष की, उत्साह से सब हरष कर ।
पांडुकशिला अभिषेक तांडव, सहस-लोचन दरश कर ।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जब आत्म-थिरता बढ़ चली, निजवास हेतु वन गए ।
तब शिवपथिक वे पार्श्व जिन, साधु दिगंबर बन गए ।
निज ब्रह्म को संबोधने, लो ब्रह्मवासी आ गए ।
पौष बदि एकादशी को, प्रचुर आनंद पा गए ।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुरुषार्थ श्री पारस प्रभु का, भाग्य भविजन का अहा ।
तुम दिव्यध्वनि भवि को मिली, विज्ञान-केवल जिन लहा ।
कृष्णा चतुर्थी चैत की, सब विश्व झलका ज्ञान में ।
प्रभु लीन निज में ही सदा, अविरल रहे मम ध्यान में ।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तज योग को संयोग को, जिनवर अदेही हो गए ।
चिरकाल के संसार को, तज मोक्षनगरी को गए ।
शुभ सप्तमी सावन सुदि, सम्मेद की पावन धरा ।
मोहान्त हो शोकान्त हो, लोकान्त को जा शिव वरा ।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

॥ जयमाला ॥

(दोहा)

पार्श्वनाथ जिनेश की, महिमा अपरम्पार ।
नित्य जपें गुणमाल को, होवें भव से पार ।

(भुजंगप्रयात)

श्री पार्श्वप्रभु को नमन हो सदा ही, विभू तीर्थकर्ता नमन भाववाही ।
नमन मोक्षपथ के दिवाकर प्रणेता, नमन स्यादवादी नमन तत्ववेत्ता ।
परम भाव ध्याया परम पद को पाया, करम नाश हेतु धरम को बताया ।
अधोभाव विकृत सभी नाश पामी, प्रभु पार्श्वस्वामी नमामि नमामि ।

प्रथम मोह बैरी को घर से निकारा, निजातम के अनुभव से सम्यक्त्व धारा ।
कषायें अनन्तानुबंधी विनाशी, सुसम्यक्त्व आचार सुज्ञान भासी ।
यही मुक्तिमारग का पहला चरण था, विभावों की सेना को दलने का रण था ।
विभू आपके पथ चलूं मैं मुदामी, प्रभु पार्श्वस्वामी नमामि नमामि ।

प्रतिक्षण करे क्षीण संसार को अब, बची जो कषायें नशें क्रम से वे सब ।
नगन वेश धारा यथाजात रुपा, धरा पर विचरते वे सिद्ध स्वरूपा ।
घड़ी दो जो आतम में आकर समाए, प्रभु श्री अरिहंत पदवी को पाए ।
समोशर्न दिव्य ध्वनि जगनामी, प्रभु पार्श्वस्वामी नमामि नमामि ।

सकल ज्ञेय ज्ञाता नहीं कोई नाता, निजानंद आनंद आपूर्ण धाता ।
विधाता जगत के नहीं काम करते, तथापि भविक के तुम्ही कष्ट हरते ।
खिरी दिव्य वाणी हुई तत्ववर्षा, मिला मुक्तिमारग सभी लोक हर्षा ।
करें तेरी पूजा निरंतर जजामि, प्रभु पार्श्वस्वामी नमामि नमामि ।

तजा देह अंतिम अरे ओ अयोगी, निराकुल सुखामृत निराबाध भोगी ।
अहो वीतरागी सभी कर्म त्यागी, अजन्मा अमर हो जरा दूर भागी ।
शिखर से शिखर-लोक पर जा विराजे, धरा तुम चरण छू कनक नाम भाजे ।
हुए तीर्थनामी महा मोक्षधामी, प्रभु पार्श्वस्वामी नमामि नमामि ।

(धत्ता छंद)

श्री पार्श्व जिनंदा आनंदकंदा पापनिकंदा सुखकारी ।
भव संकट हरता शिवसुख भरता तीरथ करता मनहारी ।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

पार्श्वनाथ जिनेन्द्र का, आराधन अभिराम ।
जिन सम निज को जानकर, पावें मोक्ष सुधाम ।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)